

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री पराङ्कुशाष्टकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री पराक्कुशाष्टकम् ॥

त्रैरिद्व्यर्द्धजनमूर्धरिदूषणं यं
सम्पत्त सात्त्विकजनस्य यदेर नित्यम्।
यद्वा शरण्यमशरण्यजनस्य पुण्यं
तत्संश्रयेम रकुलाभरणाञ्छि युगम् ॥ 1 ॥

भक्तिप्रभार भरदद्भुतभारवक्त्र
सङ्कुम्भित प्रणयसाररसौघ पूर्णः।
रेदार्थरत्ननिधिरच्युतदिर्यधाम
जीयात्पराक्कुश पयोधिरसीम डूमा ॥ 2 ॥

श्वसिं जुषामहे कृष्णतृष्णतत्त्वमिरोदितम्।
सहस्रशाखां योहद्राक्षीदद्रारिडीं ब्रह्मसंहिताम् ॥ 3 ॥

यद्गोसहस्रमपहन्ति तमांसि पुंसां
नारायणो रसति यत्र सशङ्खाचक्रः।
यन्मण्डलं श्रुतिगतं प्रणमन्ति रिप्राः
तस्मै नमो रकुलदूषण भास्कराय ॥ 4 ॥

पतुः श्रियः प्रसादेन प्राप्त सार्वज्ञ्यसंपदम्।
प्रपन्न जनकूटस्थं प्रपद्ये श्रीपराक्कुशम् ॥ 5 ॥

शठकोपमुनिं रन्दे शठानां बुद्धि दूषणम्।
अज्ञानां ज्ञानजनकं तिल्लिणीमूल संश्रयम् ॥ 6 ॥

ৰকুলাভরণং বন্দে জগদাভরণং মুনিম্।
যঃ শ্ৰুতেরুত্তরং ভাগং চক্রে দ্ৰাৰিড ভাষয়া ॥ 7 ॥

ৰকুলালঙ্কৃতং শ্ৰীমচ্ছঠকোপ পদদ্বয়ম্।
অস্মৎকুলধনং ভোগ্যমস্তু মে মূৰ্ধ্নি ভূষণম্ ॥ 8 ॥

নমজ্জনস্য চিত্তভিত্তি ভক্তি চিত্ৰ তুলিকা
ভরাহিৰীৰ্য ভঞ্জে নরেন্দ্র মন্ত্ৰ যন্ত্ৰণা।
প্রপন্ন লোক কৈরন্ন প্রসন্ন চারু চন্দ্রিকা
শঠাৰি হস্ত মুদ্রিকা হঠাদুনোতু মে তমঃ ॥ 9 ॥

॥ শ্ৰী পরাক্ৰুশাষ্টকং সমাপ্তম্ ॥